ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-10* November- 2017
Innovation The Research Concept

रामकाव्य में नारी– संवेदना

सारांश

रामकथा, धर्म सम्प्रदायों वर्णो और जातियों के वर्चस्व से कब और केसे परिवर्तित होती चली गयी यह आभास ही नहीं हुआ। हम वाल्मीकि कृत 'रामायण' से लेकर तुलसीदास के 'मानस' तक का विवरण देखे तो नारी मानव जीवन की प्रेरणा, संचालिका, आधार और आदिस्त्रोत हैः वह मानव के सामाजिक जीवन की रीढ़ है। हिन्दू समाज और साहित्य का कवियों और संतो का तथा तुलसीदास जी का नारी जाति के प्रति क्या दृष्टिकोण था, इसकी चर्चा यहाँ प्रांसगिक होगी। क्योंकि किसी देश, राष्ट्र, समाज और जाति की सभ्यता ओर सांस्कृतिक स्थिति का पता उसके नारी–सम्बन्धी विचार और भावना से लगाया जाता है। तुलसीदास जी की नारी भावना प्राचीन वैदिक ऋषियों की भावना के अनुकूल है। वे समाज में वैदिक कर्तव्यों का पालन श्रेष्ठ समझते है और नारियों के प्रति भी उच्च ओर उदार वैदिक भावना रखते है। इसमें कोई संदेह नहीं की तुलसी की नारी के प्रति भावना अत्यन्त उदार उच्च थी, फिर भी आलोचकों ने तर्क देते हुए उनकी नारी–भावना की निन्दा भी कि है। लेकिन फिर भी युग–युग से रामकथा भारत की आदिकथा रही है। जिसे भारतीय संस्कृति का रूपक कह दिया जाये तो भी कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। रामकथा में मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम का चरित्र भारतीय समाज व संस्कृति के सपष्टि रूप का पर्याय बन चुका है।

मुख्य शब्द : आदर्श राम राज्यवर्णन, माता रूप में नारी, पतिव्रता रूप में नारी।

संजीत
हिन्दी विभाग,
ए0 आइ0 जाट एच0 एम0 कॉलेज,
रोहतक, हरियाणा

प्रस्तावना

नारी के प्रति समाजिक दृष्टिकोण

तुलसीदास जी पण्डित और विद्वान भी थें उन्में निर्माण की अभूतपूर्व क्षमता थी, उस समय तत्कालीन सामाजीक ढाँचा जो जर्जरावस्था में था उन्होने अपनी रचना के माध्यम से समाज को संजीवनी बूटी पिलाई, तुलसीदास जी निर्माण में विश्वास रखने वाले और मर्यादावादी थे। राम राज्य की कल्पना आज के युग मे भी सामाजीक चेतना का आदर्श है। तुलसीदास ने पारिवारिक जीवन की आदर्श प्रतिष्ठा ही रामकाव्य के मूल में रखी। रामकथा का मूख्य उदेश्य ही सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों का सम्यक् प्रतिष्ठा करना था।

रामकथा के सभी पात्र भारतीय संस्कृतिक मूल्यों की महिमा प्रदान करते दिखाई देते है। विशेष रूप से नारी–पात्र अपनी विशिष्टता लिए हुए है। वैदिक काल से ही हिन्दु धर्म ओर सांस्कृतिक में नारी के आदर की भावना वतेमान है–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते वत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।

''जिस कुल में स्त्रियों का आदर होता है वहॉ देवता प्रसन्न रहते है और जहाँ ऐसा नहीं है, वहां सब क्रियायें व्यर्थ जाती है।

अतः नारी भारतीय मूल्यों के प्रति असीम आस्था है, त्याग की प्रतिभूतियाँ है, आदर्श पतिव्रता है, विवेकवान् समर्पणशील है, कर्तव्यपरायण व युग–युगों से धर्म की रक्षिका भी है। रामकथा में वर्णित नारी–पात्र सीता, कौशल्या, कैकेयी, मन्दोदरी, पाण्डवी, मंथरा, सुमित्रा, शूर्पणखा, शबरी आदिः नारी पात्रों का भव्य रूप चित्रण हुआ है। रामकाव्य भारतीय जीवन की सच्ची गाथा है। इसमें एक राजपरिवार की कथा वर्णित है। जिसमें जीवन के सुखःदुख एक साथ संग्रथित कियें गये है इस कथा में जीवन का यर्थाथ प्रतिबिम्बत हुआ है। रामकथा में कैकेयी जैसी कोमल व स्वच्छ पवित्र ह्रदय में किस प्रकार से ईर्ष्या का बीज–वपन हुआ और मृदुभापिनी सुन्दरी नारीसुलभ–कोमलता खोकर चट्टान की तरह दुढ़ हो जाती है। नारी चरित्र की यह परिवर्तनशीलता कथा श्लाध्य है। तुलसी ने लिखा है–

''जद्यपि नीति निपुन नर नाहू। नारिचरित जल निधि अवगाहू''।

कैकेयी के मान और हठ ने उसे कर्कश बना दिया।

दुसरी तरफ 'मानस' मे तुलसीदास जी अवधनृप दशरथ की मृत्यु से समय प्रेमविवश नारियों की क्या दशा होती है।

''करि विलाप सब रोवहि रानी।
महा विपति किमि जाई।
सुनि विलाप दुःखहु दुःखु लागा।
धीरजहु कर धीरजु भागा बखानी।।

रामकथा में नारी स्वभाव, नारी कर्तव्य, नारी धर्म, की व्याख्या अद्‌भूत है यहाँ नारी की प्रतिष्ठा और मान–मर्यादा का मूल्य पतिव्रत और पतिभक्ति ही मात्र है। रामवन गमन के समय सीता ही अगय पीड़ा का चित्र इन शब्दों में पति के सम्मृख रखती है–

''प्राणनाथ करूणायतन सुन्दर सुखद सुजान।
तुम्ह बिंनु रघुकुल कुमुद विधु सुरपुर नरक समान।।''

सीता का हृदय राम के लिए दर्पण भी बना और दीपक भी। सीता भारतीय नारी–भावना का चरमोत्कृष्ट निदर्शन है। समूचे रामकाव्य में उसके तप, त्याग एवं बलिदान के मंगल कुंकुभ से जगमगा उठा है।

आदर्श पत्नी का चरित्र हमें जगदम्बा जानकी में तब दुष्टिगोचर होता है जब श्रीराम द्वारा वन में साथ न चलने की प्रेरणा करने पर अपना अंतिम निर्णय कह देती है–

''प्राणनाथ तुम्ह बिनु जग माहीं,
मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं।
जिय बिन देह नदी बिनु बारी।
तैमिअ नाथ पुरूष बिनु नारी।।''

नारी के गुहस्थ जीवन की धुरी पत्नीत्व और मातृत्व पर अधारित होती है। मातृत्व पर अधारित होती है। मातृत्व का आदर्श है वात्सल्य।

वनगमन के समय कौशल्या का पुत्र के लिए हृदय–विदारक भावना–

''माईरी, मोहि कोउ न समुझावै।
राम–गबन साँचो, किधौं सपनों, मन परीतीति न आवै।
कौशल्या के विरह वचन सुति रोई उठीं सब राती,
तुलसीदास रधुवीर–विरह की पीरा न जाति बखानी।।''

राम, लक्ष्मण और सीता के प्रेम में माता की उद्विग्नता चरमसीमा पर पहुँच गई। माता को प्रेमभाव संसार में अलंग्ध और अद्वितीय है। सुमित्रा ने मातृत्व का ऊचां आदर्श प्रस्तुत कर भारतीय समाज और नारी–महिमा को अक्षुण रखा है।

''रागु, रोषु इरिषा मदु मोहु।
जानि सपनेहुँ इन्ह के बस होहू।
सकल प्रकार विकाट बिहाई।
मन क्रम वचन करेहु सेवकाई।।''

रामकाव्य में नारी के वीरागंना रूप को भी बड़ी सजीवता से दर्शाया है। मन्दोदरी एक ऐसी ही रानी है जिसने समय नीति के अनुसार रावण को समझाने की चेष्टा की–

''अति बल मधु कैतभ जेहि मारे।
महावीर दितिसुत संघारे।
जैहि बलि बांधि सहस भुजमारा।
सोई अवतेरउ हरन महिमारा।।''

मन्दोदरी राजनीति की विशारद् और काम–काज की सहायिका भी थी। उसने रावण को समझाने का प्रयास किया था पर रावण की हठ के कारण वह असफल रही। रामकाव्य में भरत की पत्नी माण्डवी चरित्र पतिपरायण एवं साध्वी के रूप में चित्रित हुआ है। पति की व्यथित दशा देखकर वह कह उठती है–

''नम्र स्वर में वह बोली 'नाथ'।
बताऊँ कैसे दुःख में हाथ।
बता दो यदि हो कहीं उपाय,
टपाटप गिरे अश्रु असहाय।।''

अध्ययन उद्देश्य

प्रस्तावित अध्ययन के विशिष्ट उदेश्य निम्न हैं।

1. राम कथा के माध्यम से भारतीय समाज के मूल मे स्थापित संस्कृति से पाठकों को अवगत कराना।
2. आधुनिक युग के परिदृश्य को मध्य नजर रखते हुए मानवीय भावनाओं व नारी के पूज्जनीय रूप से पाठकों को अवगत कराना।

रामकथा में जहाँ नारी की वीरागंना, पतिव्रता, मातृभाव आदि रूपों को दर्शाया गया है वहाँ पर अगर हम नारी के दुसरें रूप को देखे तो उसे निन्दा को 'मानस' में चार भागों में वर्णित किया हैं।

1. नारी द्वारा नारी की निन्दा
2. पुरूषों द्वारा नारी की निन्दा
3. राम द्वारा नारी की निदा
4. विभिन्न पात्रों द्वारा नारी की निन्दा

रामकाव्य मे अगर हम अन्य या विभिन्न पात्रों की बात करते है तो मंथरा, शबरी, शूर्पणखा का नाम आता है। जहाँ मंथरा निम्न या नीच दासी थी वहीं वह स्वाभाविक एवं कर्तव्य परायण भी है। कैकेयी द्वारा अनजाने से कही से बात–

''काने खोरे कूबरे,
कुटिल कुचाली जाति।
तिय विसेषि पुति चेरि
कहि भरत मातु मुस्कानी।।''

कैकेयी का यह परिहास कितना भयानक परिहास है, जो मंथरा के हृदय पर आधात करता हैं।

शूर्पणखा में भी नारी सुलभ भाव पंचवटी में दिखाई देते है वहीं दूसरी तरफ उसकी काम–भावना भी प्रदर्शित होती है।

''अपना ही कुल शील प्रेम में,
पड़कर नहीं देखती हम।
प्रेमपात्र का क्या देखेंगी,
प्रिय है जिसे लेखती हम।।''

शबरी ने भी राम समक्ष स्वयं अपनी निन्दा की है–

''के हि विधि अस्तुति करों तुम्हारी।
अधम जाति मै जडभति भारी।
अधम ते अधम अधम अतिनारी।
तिन्ह महँ मैं मतिमन्द गँवारी।।''

शबरी ने राम के सम्मुख अपनी विनम्रता प्रदर्शित की राम ने भी शबरी के वाक्य का प्रतिवाद नहीं किया। जिससें नारी के प्रति उनकी भावना स्पष्ट हो जाती है।

अन्य पुरूषों द्वारा नारी की निन्दा 'मानस' में देखने को मिलती है। समुंद्र द्वारा नारी निन्दा में कहे गये शब्द–

''ठोल गँवार सूद्र पशु नारी।
ये सब ताड़न के अधिकारी।।''

राम मर्यादा पुरूषोत्तम है राम ने समुंद्र द्वारा नारी की निन्दा सुनी परन्तु कुछ कहा नही उसकी उपेक्षा कर समुंद्र की बात की व्यर्थता सिद्ध की –

''सुनत विनीत अति कह कृपाल मुसुकाइ।
जिही विधि उतेरे कपि कतकुतात सो कहहु उपाइ।।''

नारी–निन्दा का तुलसीदास पर आरोप भ्रामक ओर निरर्थक है। अगर हम रामकाव्य में नारी–पात्रों की और दृष्टिपात करे तो शत्रु की पत्नी सीता के प्रति मन्दोदरी का व्यवहार कितना स्नेहव्रत् था। इस प्रेरणा को ग्रहण कर नारी भी नारी का सम्मान करना सीखें, तो वह पुरूषों का पथ–पर्दशन करेंगी।

निष्कर्ष

रामकाव्य में एक आर्दश भारतीय समाज का चित्र है। अब सवाल यह है कि बदलती हुई "आधुनिक" दृष्टि वाले समाज के सन्दर्भ में इसकी क्या स्थिति है। उपादेयता और प्रेरणास्पदता है? क्योंकि आज भी हमारे समाज में रामकाव्य या रामचरितमानस का गायन किया जाता है। मानवीय मूल्यों व नारी चेतना जागृत करने में रामकाव्य की महती भूमिका रही है। नारी चेतना जागृत करने में रामकाव्य की महती भूमिका रही है। इसके सभी पात्र वर्तमान नारी–विमर्श को एक नई दिशा दे सकते है। क्योंकि ''भारतीय नारियाँ जातीय संस्कृति की संरक्षिका है। सर्वोत्तम स्त्रियोचित गुणों की मूर्तमान आदर्श है।''

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ राजाराम रस्तोगी, तुलसीदास जीवनी और विचारधारा, अनुसंधान प्रकाशन आचार्य नगर, कानपुर।*
2. *डॉ राजाराम रस्तोगी, तुलसीदास जीवनी और विचारधारा, अनुसंधान प्रकाशन आचार्य नगर, कानपुर।*
3. *डॉ राजाराम रस्तोगी, तुलसीदास जीवनी और विचारधारा, अनुसंधान प्रकाशन आचार्य नगर, कानपुर, पृष्ठ न. 276*
4. *मानस अयोध्या काण्ड दोहा स. 152.*
5. *गीतावली अयोध्या काण्ड दोहा स. 53.*
6. *मानस सुन्दर काण्ड पद स. 57,59।*
7. *डॉ राजाराम रस्तोगी, तुलसीदास जीवनी और विचारधारा, अनुसंधान प्रकाशन आचार्य नगर, कानपुर, पृष्ठ न. 202।*
8. *डॉ राजाराम रस्तोगी, तुलसीदास जीवनी और विचारधारा, अनुसंधान प्रकाशन आचार्य नगर, कानपुर, पृष्ठ न.190।*